IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डिजिटल युग में धार्मिक पर्यटन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

[1]कर्णदत्त सिंह शेखावत

[2]डॉ. स्वाति भाटी

[1]शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर-राजस्थान, भारत

[2]विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, गुरुनानक स्नातकोतर कन्या महविद्यालय, उदयपुर-राजस्थान, भारत

शोध सार

प्राचीन भारतीय धार्मिक परिप्रेक्ष्य के अनुसार धर्म, व्यक्ति के जीवन और उसके क्रियाकलापों के अनुसार समाज में उसके स्थान को निर्धारित करता है। यह मात्र एक विषय-वस्तु या केवल एक धारणा नहीं है, यह उन प्रमुख सामाजिक इकाइयों का प्रतिनिधित्व बंडल है और इसके इर्द-गिर्द लोग एवं समाज-रूपी ताना-बाना बुना गया है। समय के साथ-साथ धर्म को मानने वाले व्यक्तियों की मनोवृत्ति एवं धर्म के प्राचीन स्वरूप में परिवर्तन भी आया है।

इस परिवर्तन को वर्तमान के डिजिटल युग में हो रहे धार्मिक पर्यटन के विभिन्न स्वरूपों उसके स्तरों एवं क्रिया रूपों के रूप में देखा जा सकता है। आज भारत देश के लगभग समस्त प्राचीन धार्मिक स्थलों पर किसी न किसी रूप में डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक मल्टीमीडिया का प्रभावी प्रयोग एवं उपयोग देखा जा सकता है। शोधकर्ता ने इस शोध में डिजिटल युग के फलस्वरुप धार्मिक पर्यटन की भूमिका में जिस प्रकार परिवर्तन हो रहे हैं उनका एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया है। इस शोध का कार्य क्षेत्र, शोध क्षेत्र राजस्थान राज्य के बीकानेर जिले में स्थित श्री करणी माता मंदिर देशनोक है। जो मंदिर चूहों वाली देवी के रूप में या चूहों वाले मंदिर के रूप में विश्व जगत में प्रख्यात है। यदि बीकानेर जिले के इस कस्बे देशनोक का जिक्र किया जाए तो यह मूल रूप से एक ग्रामीण एवं शहरी अंचल को आत्मसात किए हुए उद्घाटित होता है।

करणी माता मंदिर देशनोक में देश-विदेश से अनेकों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं यह पर्यटन की धार्मिक प्रवृत्ति को प्रस्तुत करता है, कुछ बिंदुओं में यदि देखा जाए तो यहां की कला एवं संस्कृति तथा सामाजिक सद्भाव से प्रेरित होकर अनेक पर्यटक इसे देखने आते हैं। किस प्रकार यहां के बाजारों में डिजिटल युक्तियो का प्रयोग किया जा रहा है चाहे वह सामान की खरीद हो मंदिर में चढ़ने वाले प्रसाद का ऑनलाइन पेमेंट हो, या फिर कहीं रुकने के अतिथि गृहों में ऑनलाइन बुकिंग हो, वहां से आने-जाने के लिए ऑनलाइन बुकिंग हो, या डिजिटल प्लेटफार्म से प्रेरित होकर यहां आने वाले धार्मिक श्रद्धालु हो यह समस्त डिजिटल युग के धार्मिक पर्यटन की भूमिका को उद्घाटित करते हैं।

मुख्य शब्द :- डिजिटल युग, धार्मिक पर्यटन, श्री करणी माता मंदिर, देशनोक, ऑनलाइन-बुकिंग, धार्मिक-सेवा, सोशल-मीडिया, सामाजिक-प्रभाव, नैतिक-स्तर ।

परिचय

समाजशास्त्रीय दृष्टी से धर्म, समाज व संस्कृति, का प्रतिनिधित्व करता है यह लोगो में एक विशेष भावना के विकास हेतु प्रतिबद्ध है । आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण जैसी अवधारणाओ एवं प्रक्रियाओ ने धर्म के मार्ग को अधिकाधिक विस्तृत किया है धार्मिक पर्यटन, पर्यटन का ही एक रूप है जिसका विकास प्राचीन अवश्य है किंतु स्वरूप में नवीन ऊर्जा व सामाजिक-सांस्कृतिक जिज्ञासा समाहित है, जिसके इर्द-गिर्द ही व्यक्ति धार्मिक पर्यटन में सहभागिता प्रदर्शित कर रहा है। शोधकर्ता द्वारा इस शोध-कार्य में बीकानेर जिले के श्री करणी माता मंदिर देशनोक में कुल 65 व्यक्तियों का साक्षात्कार कर शोध कार्य को किया गया है। जिसकी उपयोगिता या जिसका उद्देश्य डिजिटल युग में धार्मिक पर्यटन में हो रहे, विशेष प्रकार के बदलाव विशेष-प्रकार की युक्तियो के प्रयोग डिजिटल-सुविधाओं, व सामाजिक एवं डिजिटल-इंटरफेस तथा सोशल मीडिया एवं धार्मिक-सेवाओं का प्रभाव इत्यादि की जानकारी तथा इन सभी के प्रयोग से किस प्रकार एक पर्यटक अर्थात एक धार्मिक पर्यटक इससे स्वयं का जुड़ाव महसूस करता है इन समस्त प्रकार के तथ्यों का संकलन शोध में किया गया है। जिसमें महिलाएं, बच्चे, पुरुष, एवं वरिष्ठ नागरिक, अर्थात (बुजुर्ग व्यक्ति) शामिल है।

❖ डिजिटल युग का सामाजिक सरोकार

डिजिटल युग केवल एक अवधारणा नहीं है यह एक वास्तविकता है। ऐसी वास्तविकता जिसने व्यक्ति व समाज को बड़े ही आधुनिक एवं अनूठे तरीके से परिभाषित किया है सामाजिक संबंधों के जाल ने डिजिटल युग के नेटवर्क के जाल में स्वयं को एक विस्तृत एवं व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित करने का भरसक प्रयास किया है, व्यक्ति क्या है? व्यक्ति एक इकाई है जो समाज में पाया जाता है और समाज व्यक्तियों की इकाइयों से बनी हुई एक वृहद इकाई है।

❖ श्री करणी माता मंदिर देशनोक में धार्मिक पर्यटन का स्वरूप तथा डिजिटल युग से सरोकार

शोधकर्ता द्वारा श्री करणी माता मंदिर देशनोक में डिजिटल युग से धार्मिक पर्यटन के संबंध को ज्ञात करने के लिए तथा उसके प्रभाव को प्रस्तुत करने के लिए यह शोध किया गया करणी माता मंदिर एक प्राचीन मंदिर है, यह तथ्य वहां के ऐतिहासिक और पौराणिक संदभो से जुड़े कई विवरणों में मौजूद एवं स्थानीय लोगो द्वारा ऐसा उल्लेखित किया गया है, मंदिर के प्राचीन इतिहास को देखते हुए यहां पर अनेक श्रद्धालु अपनी मनौती को पूर्ण करने के लिए आते रहते हैं। जो श्रद्धालु देश-विदेश से आते हैं, उनके अपने-अपने मत होते है। शोधकर्ता द्वारा किए गए अवलोकन से यह स्पष्ट होता है की वर्तमान के डिजिटल युग का इन पर्यटकों पर अवश्य प्रभाव पड़ा है, इस प्रभाव को देखने के लिए विशेष रूप से उन पर्यटकों से बातचीत की गई तो यह ज्ञात होता है की धार्मिक प्रवृत्ति के साथ-साथ ही सांस्कृतिक विरासत को देखने के लिए भी लोग यहां आते हैं।

❖ आधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से श्री करणी माता मंदिर का लोकसंस्कृति से सरोकार / सोशल मीडिया पर श्रद्धा का प्रसार

श्री करणी माता मंदिर देशनोक, लोकसंस्कृति एवं आस्था का केंद्र माना जाता है। पारंपरिक तोर पर लोग इस धार्मिक स्थल से अपना जुड़ाव रखते है, ये तथ्य शोधकर्ता को अपने शोध कार्य के दोरान वहा के लोगो से ज्ञात हुआ ।आधुनिक युक्तियो एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म्स कि दुनिया ने इस स्थल कि धार्मिक प्रष्टभूमि को और भी मजबूती प्रदान कि है, जिसका अनेक नये धार्मिक नवाचारो में प्रयोग देखा गया है सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर यह स्थल अनेक सामाजिक और धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का उद्घाटन करता है। करणी माता मंदिर कि विरासत और सांस्कृतिक प्रष्टभूमि इतनी प्रभावी है, कि इस स्थान का क्षेत्रीय लोकसंकृति में महत्वपूर्ण स्थान है, जो वहा आने वाले धार्मिक एवं सास्कृतिक पर्यटकों और श्रद्धालुओं में देखा गया है । शोधकर्ता द्वारा महिलाओं, पुरुषो, युवाओ व बुजुर्गो तथा बच्चो के साक्षात्कार करके कुछ आकड़े प्राप्त किये गये है जिनकी कुल संख्या 20 महिलाए व 13 पुरुष तथा 9 युवा एवं 16 बुजुर्ग व 7 बच्चे है कुल 65 लोगो के आकड़े शोधकर्ता ने संकलित करके यह शोध कार्य किया है।

सारणी :- 1 श्री करणी माता मंदिर के धार्मिक पर्यटन में लोगो द्वारा डिजिटल युक्तियो के प्रयोग का विवरण ।

क्र. स.	लिंग	संख्या	धार्मिक जुड़ाव का माध्यम	डिजिटल दान प्रणाली में सहयोग	अतिथि घरो कि बुकिंग का माध्यम	सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता का साधन	धार्मिक आयोजनों कि जानकारी प्राप्त करने का माध्यम	धार्मिक सामग्री खरीद का माध्यम	वाहन बुकिंग का प्रकार
1.	पुरुष	13	पारंपरिक धार्मिक चैनल एवं ऑनलाइन युक्ति	ऑनलाइन युक्ति एवं ऑफलाइन युक्ति द्वारा	डिजिटल युक्ति व प्रत्यक्ष माध्यम	धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन व डिजिटल प्लेटफॉर्म्स द्वारा	प्रत्यक्ष माध्यमो से एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म्स द्वारा	ऑनलाइन व ऑफलाइन युक्ति प्रयोग	निजी वाहन एवं ऑनलाइन बुकिंग
2.	महिला	20	धार्मिक ऑनलाइन ग्रुप एवं पारंपरिक माध्यम	ग्रुप के माध्यम से ऑनलाइन व ऑफलाइन दान	ऑफलाइन व ऑनलाइन दोनों माध्यमो से	सखी ग्रुप्स एवं डिजिटल युक्तियो के द्वारा कुछ पारिवारिक माध्यम भी	डिजिटल ग्रुप्स एवं सखियों के माध्यम से तथा पारंपरिक	ऑनलाइन व समूह द्वारा ऑफलाइन माध्यम का चयन	पारिवारिक वाहन तथा ग्रुप के लिए ऑनलाइन बुकिग
3.	युवा	9	ऑनलाइन ख्याति देख कर एवं मित्रों के माध्यम से	ऑनलाइन	ऑनलाइन माध्यम से	जिज्ञाषा पूर्ति तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर ख्याति हेतु	डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर जानकारी के माध्यम से	ऑनलाइन माध्यम	निजी वाहन एवं ऑनलाइन बुकिंग

4.	बुजुर्ग	16	पारंपरिक जुड़ाव एवं टेलीविजन तथा पारंपरिक ग्रुप के माध्यम से	पारंपरिक माध्यम या ऑफलाइन दान	ऑनलाइन व ऑफलाइन एवं सामाजिक संस्थानों के समूहों के माध्यम, से	पारंपरिक आयोजनों में सांस्कृतिक जाग्रति एवं धार्मिक जुड़ाव के द्वारा व टेलीविजन के माध्यम से	प्रत्यक्ष जुड़ाव एवं पारंपरिक व धार्मिक-सांस्कृतिक श्रद्धा-भाव के माध्यम से	ऑफलाइन माध्यम से	पारिवारिक वाहन एवं पारंपरिक ऑफलाइन युक्ति प्रयोग
5.	बच्चे	7	परिवार के माध्यम से	परिवार द्वारा	पारिवारिक निर्णय माध्यम	माता-पिता द्वारा प्रदत जानकारी	परिवार के प्रयोजनों से	माता-पिता द्वारा	पारिवारिक सहमति पर निर्भरता
कुल संख्या		65							

लोग समस्त प्रकार की ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। चाहे वह ऑनलाइन बैंकिंग, ऑनलाइन बुकिंग, डिजिटल सुविधाओं, का प्रचार-प्रसार डिजिटल सुविधाओं, कि खरीद व ऑनलाइन अतिथि गृहों, की बुकिंग करना एवं ऑनलाइन दान वितरण, इत्यादि कार्यक्रम एवं इनका संचालन डिजिटल युग की युक्ति के माध्यम से ही किया जा रहा है। जिसमे शोधकर्ता ने 13 पुरुषो, 20 महिलाओ, 9 युवाओ, एवं 16 बुजुर्गो तथा 7 बच्चो को समिलित कर अध्यन किया, जिसमे शोधकर्ता ने साक्षात्कार कर उक्त आकड़े एकत्रित किये है। कुल 65 लोगो के आकड़े एकत्रित किये गये। उक्त आकड़े श्री करणी माता मंदिर के धार्मिक पर्यटन में डिजिटल युक्तियो, एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म्स एवं आधुनिक युक्ति, प्रयोग कर धार्मिक पर्यटन को और सुगम बनाने के मार्ग को उद्घाटित करते है।

सारणी :- 2 धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में महिला सहभागिता का विवरण

क्र. स.	**महिला**	**डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव**	**भक्ति चैनल्स से जुड़ाव**	**धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव**	**मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव**	**धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता**
1.	11	हां	नहीं	हां	हां	नहीं
2.	7	नही	हां	हां	हां	हां
3.	2	नहीं	हां	नहीं	हां	हां
कुल महिलाओं कि संख्या	20					

धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में महिला सहभागिता का विवरण कुछ इस प्रकार है, कि 11 महिलाओ कि सहभागिता डिजिटल ग्रुप्स में पाई गयी और 7 महिलाओ + 2 महिलाओ = 9 महिलाओ का डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव, नहीं पाया गया तथा 11 महिलाओ द्वारा भक्ति चैनल्स से जुड़ाव व धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता नहीं पाई गयी एवं 7 महिलाओ + 2 महिलाओ = 9 महिलाओ का भक्ति चैनल्स से जुड़ाव एवं मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव तथा धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता पाई गयी व 11 महिलाओ + 7 महिलाओ कुल = 18 महिलाओ का जुड़ाव धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण व मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव पाया गया और धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव 2 महिलाओ द्वारा नहीं पाया गया । कुल 20 महिलाओ के आकड़े शोधकर्ता द्वारा प्राप्त किये गये ।

सारणी :- 3 धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स मे पुरुष सहभागिता का विवरण

क्र. स.	पुरुष	डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव	भक्ति चैनल्स से जुड़ाव	मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव	धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव	धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता
1.	6	हां	हां	हां	हां	हां
2.	5	हां	हां	हां	हां	नहीं
3.	2	नहीं	हां	नहीं	नहीं	हां
कुल पुरुषो कि संख्या	13					

धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स मे पुरुष सहभागिता के तोर पर 6 पुरुष + 5 पुरुष = 11 पुरुषो द्वारा डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव व 2 पुरुषो का इससे जुड़ाव नहीं पाया गया और 6 पुरुष + 5 पुरुष + 2 पुरुष = 13 पुरुषो द्वारा भक्ति चैनल्स से जुड़ाव, तथा 6 पुरुष + 5 पुरुष = 11 पुरुषो द्वारा मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी में सहभागिता पाई गयी । वही 2 पुरुषो में यह सहभागिता नहीं पाई गयी । धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से निकटता 6 पुरुष + 5 पुरुष = 11 पुरुषो में पाई गयी, वही 2 पुरुषो में यह नहीं पाई गयी । वही 6 पुरुष + 2 पुरुष = 8 पुरुषो कि सहभागिता धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में पाई गयी एवं 5 पुरुषो कि सहभागिता धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में नहीं पाई गयी । शोधकर्ता द्वारा कुल 13 पुरुषो के आकड़े प्राप्त किये गये ।

सारणी :- 4 धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में युवा सहभागिता का विवरण

क्र. स.	युवा	डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव	भक्ति चैनल्स से जुड़ाव	मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव	धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव	धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता
1.	3	हां	नहीं	हां	हां	नहीं
2.	4	हां	नहीं	हां	हां	नहीं
3.	2	हां	नहीं	नहीं	हां	हां
कुल युवाओ कि संख्या	9					

धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स मे युवा सहभागिता के तोर पर 3 युवा + 4 युवा + 2 युवा = 9 युवाओ द्वारा डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव पाया गया। 3 युवा + 4 युवा + 2 युवा = 9 युवाओ द्वारा भक्ति चैनल्स से जुड़ाव नहीं पाया गया , तथा 3 युवा + 4 युवा = 7 युवाओ द्वारा मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी में सहभागिता पाई गयी। वही 2 युवा में यह सहभागिता नहीं पाई गयी। धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव 3 युवा + 4 युवा + 2 युवा = 9 युवाओ में पाया गया, 3 युवा + 4 युवा = 7 युवाओ कि सहभागिता धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में नहीं पाई गयी, 2 युवा कि सहभागिता धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में पाई गयी। कुल 9 युवाओ के आकड़े शोधकर्ता द्वारा प्राप्त किये गये।

सारणी :- 5 बुजुर्ग सहभागिता का धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में विवरण

क्र. स.	बुजुर्ग	भक्ति चैनल्स से जुड़ाव	डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव	मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव	धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव	धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता
1.	8	हां	नहीं	हां	हां	हां
2.	5	हां	हां	हां	हां	हां
3.	3	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां
कुल बुजुर्गो कि संख्या	16					

धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स मे बुजुर्ग सहभागिता के तोर पर 8 बुजुर्ग + 5 बुजुर्ग + 3 बुजुर्ग = 16 बुजुर्गो द्वारा भक्ति चैनल्स से जुड़ाव पाया गया, 8 बुजुर्ग + 3 बुजुर्ग = 11 बुजुर्गो द्वारा डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव नहीं पाया गया, तथा 5 बुजुर्गो द्वारा डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव पाया गया। मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी में सहभागिता के तोर पर 8 बुजुर्ग + 5 बुजुर्ग = 13 बुजुर्गो के द्वारा पाई गयी। वही 3 बुजुर्गो में यह सहभागिता नहीं पाई गयी। धार्मिक कार्यक्रमों के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव 8 बुजुर्ग + 5 बुजुर्ग = 13 बुजुर्गो में पाया गया, वही 3 बुजुर्गो में यह जुड़ाव नहीं पाया गया। 8 बुजुर्ग + 5 बुजुर्ग + 3 बुजुर्ग = 16 बुजुर्गो कि सहभागिता धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में पाई गयी। कुल 16 बुजुर्गो के आकड़े शोधकर्ता द्वारा प्राप्त किये गये।

सारणी :- 6 बच्चो कि सहभागिता का धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स में विवरण

क्र. स.	बच्चे	धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता	डिजिटल ग्रुप्स से जुड़ाव	मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी से जुड़ाव	धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से जुड़ाव	भक्ति चैनल्स से जुड़ाव
1.	7	पारिवारिक सहभागिता	प्रत्यक्ष नहीं पारिवारिक जुड़ाव	पारिवारिक	माता-पिता का जुड़ाव	पारिवारिक
कुल बच्चो कि संख्या	7					

धार्मिक-डिजिटल प्लेटफॉर्म्स मे बच्चो कि सहभागिता के तौर पर 7 बच्चो द्वारा धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनों में पारिवारिक सहभागिता पाई गयी, वही डिजिटल ग्रुप्स से प्रत्यक्ष जुड़ाव नहीं पाया गया, तथा मल्टीमीडिया के माध्यम से नयी सांस्कृतिक जानकारी में सहभागिता के तौर पर पारिवारिक सहभागिता पाई गयी प्रत्यक्ष सहभागिता नहीं पाई गयी। धार्मिक कार्येक्रमो के डिजिटल प्रसारण से माता–पिता द्वारा जुड़ाव पाया गया। भक्ति चैनल्स से जुड़ाव का माध्यम पारिवारिक सहभागिता पाई गयी। कुल 7 बच्चो के आकड़े शोधकर्ता द्वारा प्राप्त किये गये।

❖ निष्कर्ष

निष्कर्ष तौर पर यह ज्ञात होता है, कि श्री करणी माता मंदिर देशनोक, बीकानेर के धार्मिक पर्यटन में डिजिटल युक्तियो के प्रयोग एवं उनके निरंतर बढ़ते स्तर को सामाजिक एवं आर्थिक तथा सांस्कृतिक तौर पर सपष्ट रूप से देखा जा सकता है। शोधकर्ता द्वारा किये गये शोध से यह विश्लेषित किया गया है, कि किस प्रकार आधुनिक युग में जनता द्वारा नवीन डिजिटल प्लेटफॉर्म्स एवं डिजिटल स्तर कि युक्तियो का अत्यंत प्रभावी तौर पर उपयोग करके धार्मिक पर्यटन के स्वरूप को एक अलग डिजिटल व आधुनिक दिशा दी जा रही है। भविष्य मे जिस प्रकार धार्मिक पर्यटन का डिजिटल स्वरूप होगा यह तथ्य भविष्य के गर्भ में समाहित अवश्य है, किन्तु वर्तमान के धार्मिक पर्यटन में डिजिटल युक्तियो के प्रख्यात प्रयोग को शोधकर्ता द्वारा उद्घाटित किया गया है

❖ सन्दर्भ सूची

1. एच,नैन. (2022). धार्मिक पर्यटन के आर्थिक और सामाजिक निहितार्थ. Research Review International Journal of Multidisciplinary, 7(10), 82-93. doi:10.31305/rrijm.2022.v07.i10.010
2. मेहरोत्रा, टी. ए. (2022). राजस्थान में धार्मिक पर्यटन के प्रभाव, पुष्कर पर एक केस स्टडी. International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM), 6(4), 1-8.
3. सिंह, एस. (2021). भारत में धार्मिक पर्यटन – अतीत, वर्तमान और भविष्य. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च, 2455-2232.
4. मुख़र्जी, आर., अग्रवाल, बी. (2021). धर्म का समाजशास्त्र ISBN 9390556155
5. आनंद, एस., और राय. एस. (2019). राजस्थान में सांस्कृतिक पर्यटन: इसके विकास और प्रभावों का एक अध्ययन. जर्नल ऑफ टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी, 8(2), 1-11.
6. चारण,एन. एस. (2018). श्री करणी माता का इतिहास
7. कुमार, ए. (2018). भारत में पर्यटन और संस्कृति: राजस्थान का एक अध्ययन. कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
8. चौहान, एस. (2018). राजस्थान में सांस्कृतिक पर्यटन: संभावनाओं और चुनौतियों का अध्ययन. जर्नल ऑफ टूरिज्म रिसर्च एंड हॉस्पिटैलिटी, 7(2), 1-6.
9. जोशी, आर., और अग्रवाल, एस. (2016). राजस्थान में आध्यात्मिक पर्यटन का आर्थिक प्रभाव. जर्नल आफ टूरिज्म इकोनॉमिक्स, 25(3), 45-60.
10. मेहता, एस. (2014). धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक संरक्षण: राजस्थान से अंतर्दृष्टि. जर्नल आफ कल्चर हेरिटेज मैनेजमेंट, 6(2), 132-145.